वर्ष 21 अंक 1
मई 2014

समाचार सामयिकी

हरियाणा तरंग

मूल्य : 30/-

साहित्य को समर्पित

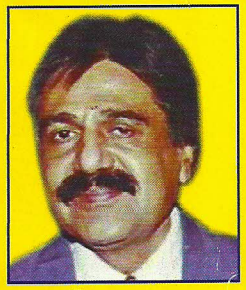

ज़हीर अब्बास

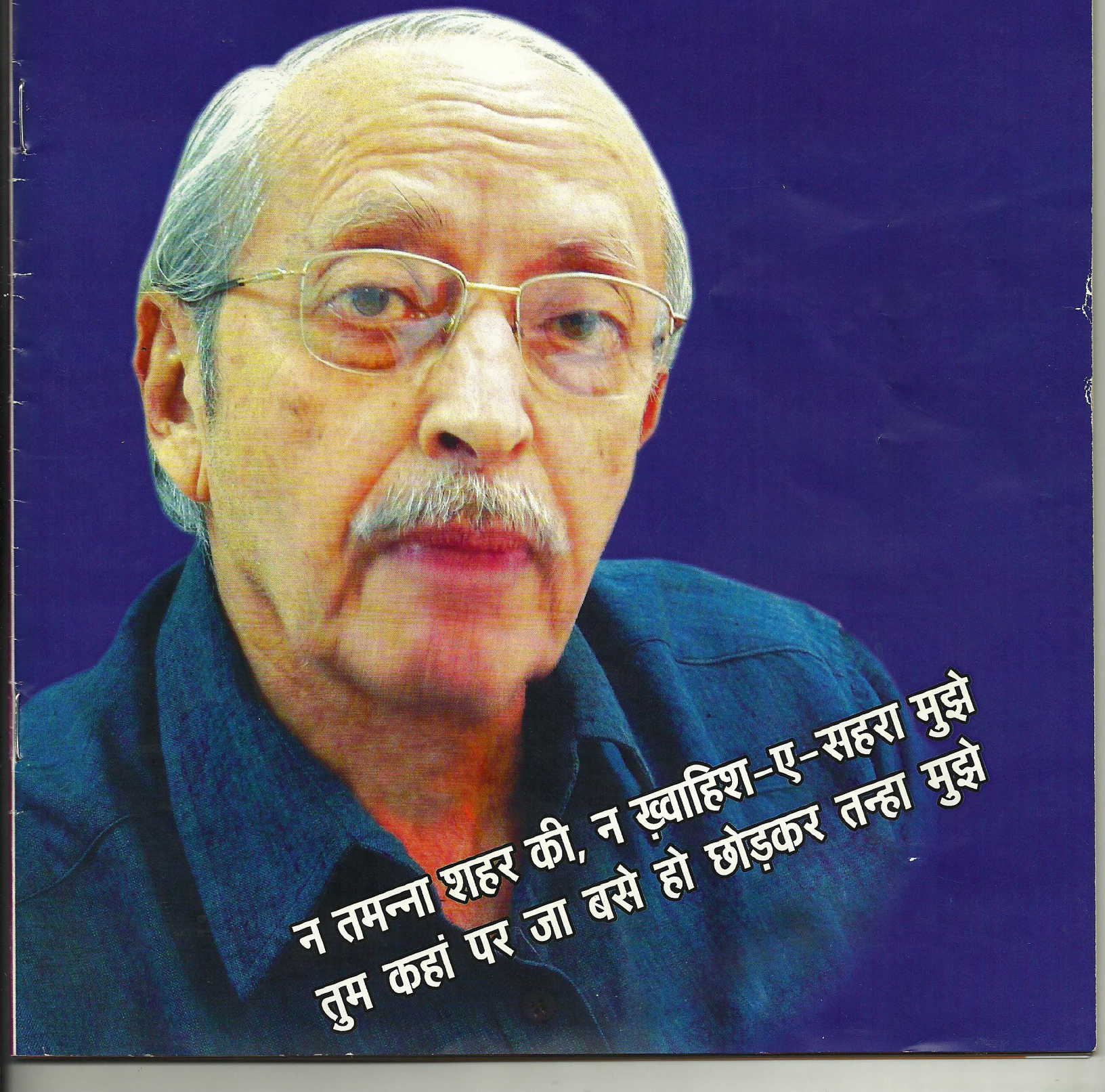

न तमन्ना शहर की, न ख़्वाहिश-ए-सहरा मुझे
तुम कहां पर जा बसे हो छोड़कर तन्हा मुझे

एक सुरीली नेक शख़्सीयत जिसे वक्त के शोलों ने कुन्दन बना दिया

अदब, अहसासात, दोस्ती, मुहब्बत और इन्सानियत का नायाब मुजस्समा

अशोक साहनी 'साहिल'

मुल्क की राजधानी दिल्ली की अदबी दुनियां में चंद ही ऐसे लोग हैं, जिन्हें सचमुच अदब का पकीज़ा हिस्सा मानने में किसी को ज़रा भी ऐतराज़ नहीं हो सकता। अशोक साहनी 'साहिल', एक सुलगता शायर है जिसकी फ़ितरत में समायी सादगी, जिस की जुबान पर तैरती मिठास, जिसकी आंखों से झांकती इंसानियत और जिसकी हथेलियों की छुअन से उफ़नती दोस्ती का एहसास, उसे लाखों में एक का दर्जा अता करता है। लोग कहते हैं कि जितनी भी बार 'साहिल' से मिलते हैं वह पहले से कुछ ज्यादा ही गहरा दिखाई देता है। अक्सर वह अपने नाम के मायनों को सच साबित करता हुआ 'साहिल' बिल्कुल शांत बल्कि बेहद शांत दिखाई देता है। ज़रा सोचिये कितना मुश्किल होता होगा इस 'साहिल' के लिये अपने वजूद में गरज़ते तूफ़ान और सनसनाती लहरों के शोर को अपने विशाल सीने में संजोकर ख़ामोशी की चादर से ढकने की कामयाब कोशिश करना, हर रोज़... हर बार... बार बार। यह वो ज़िन्दा इन्सान है जिस की गुफ़्तुगु का हर जुमला किसी सुरीली नज़्म का हिस्सा होने का अहसास दिलाता है। एक चेहरा जिसकी जुबान और ऑखें एक ही भाषा में कुछ कहती हैं, एक अजनबी शख़्सीयत जो पहली मुलाकात में अपने अनोखे बेबाक अंदाज की गुनगुनी गरमाहट की वजह से, जाने कब अपनी सी लगने लगती है।

लाहौर में जन्मे जनाब अशोक साहनी 'साहिल' ने शुरूआती तालीम सैन्ट एन्थोनी स्कूल लाहौर पाकिस्तान और माडर्न स्कूल दिल्ली से हासिल की। बाद में आपने सैन्ट स्टीफ़न कालेज दिल्ली से इकोनोमिक्स की डिग्री हासिल की। कारोबारी ज़िंदगी का पहला सफ़र इन्डियन इन्डस्ट्रियल हाउस से शुरू किया और तकरीबन बीस साल उससे जुड़े रहे । सन् 1978में मोनार्क इन्टरनेशनल संस्थान की नीवं रखी और उसके बाद पीछे मुड़ के देखने की फ़ुर्सत ही नहीं मिली। व्यवसायिक परिपक्वता, ज़बरदस्त पारदार्शिता और लक्ष्य के प्रति सम्पूर्ण समर्पण की बुनियाद पर खड़े मोनार्क इन्टरनेशनल और संजीदा साहित्य की दुनिया में

अल्फ़ाज और एहसासात के जादूगर ज़नाब अशोक साहनी 'साहिल' की जाति ज़िंदगी से वाबस्ता कुछ चमकते सितारे

खुद अशोक साहनी 'साहिल' महज एक व्यक्ति या कम्पनी के बजाए एक खूबसूरत रोल माडल स्तर की पहचान बना चुके हैं। दुनिया के मुख़्तलिफ़ हिस्सों में कामयाब कारोबारी इकाईयां स्थापित करने के साथ-साथ जनाब साहिल ने अदब के फ़लक पर भी अपनी बहुत ही अहम मौजूदगी दर्ज करवाई। अब तक लगभग 30 पुस्तकें हिन्दी और उर्दू में प्रकाशित हो चुकी हैं जिसे लण्डन और नई दिल्ली के मशहूर पब्लिकेशन कंम्पनीज ने प्रकाशित किया। शायरी, मौसीकी, गोल्फ और कारोबारी दुनियां में एक अहम पुख़्ता पहचान रखने वाले अशोक साहनी साहिल एक सादादिल, साफ़गोह और सजग शख्सयित हैं, जिन्हें मिल कर किसी भी इंसान के दिल में खुलकर जीने की तम्मन्ना हिलोरें लेने लगती है।

मुझे पढ़के यारों मुझी को बताओ कि 'साहिल' ने हर एक से लिखा अलग है

एक अलग और अहम मुकाम रखने वाले जनाब रज़ा अमरोहवी के अल्फ़ाज़ में... अशोक साहनी 'साहिल' शायरे नफ़सियात और माहिरे नफ़सियात भी है। फ़राख़ दिल, ज़िन्दा दिल और खुशदिल वाक़े हुए हैं। जज़्बात में हरारत, बयान में सदाक़त, क़लम में नदुरत, निगाहों में अज़मत, शऊर से रफ़अत, रहन-सहन से शान-ओ-शौकत, चाल में वज़ाहत और क़दमों में दौलत रखते हैं। लेकिन ना वह मग़रूर हैं और न ख़ुदग़र्ज़। उनकी सोच आलमी सोच है वह बेसबातीये दुनिया की आगाही रखते हैं। एक दिन जिस्म फ़ना हो जाएगा जन्नत और दोज़ख़ पर भी उन्हें यक़ीन है उन्होंने लफ़्ज़ों से सनए ताजमहल तराशे हैं। नुनके मुशाहदात उनकी बारीक बीनी उनकी नदोरत फ़िक्र उनके बुलन्द इरादे उनके तफ़करा के मज़हर हैं। उन्होंने पहाड़ों और कोहसारों के सीनों को पाश-पाश करके कोहन की तरह जूऐं शेर निकाली हैं जो उनकी बुलन्द हौसलगी का ज़िन्दा सबूत हैं। वह अपने ज़हन-ओ-फिक्र में मोहब्बत की शम्में फ़रोज़ां रखते हैं।

क्या खूब है कुदरत का निज़ाम दोस्तों, सब जानते हुए भी ख़बर नहीं है हमें।
ऐ बादे मुख़ालिफ़ न डरा तू हम्हें, रहमत अता है खुदा की हमें।

तू रौशनी अदब की, औ ग़ज़ल की शान है
दिलदार, जिगर, यार तुझे सौ सलाम हैं

संग